अ ली क

अंक: चार
पौष़ ।। जनवरी ।। 2024

लीक लीक गाड़ी चले लीकहिं चले कपूत

लीक छोड़ तीनों चलें शायर सिंह सपूत

अ ली क

अंक: चार

पौष ।। जनवरी ।। 2024

सम्पादक

नील कमल

अलीक पत्रिका के लिए नील कमल द्वारा 244, बाँसद्रोणी प्लेस, कोलकाता- 700070 से प्रकाशित

दूरभाष: 9433123379/ 8013046813

ई-मेल: nneelkkamal@gmail.com

◆

कविता

प्रियदर्शी मातृ शरण की पाँच कविताएँ

लोभियों का गाँव

पलायन

डर है मुझे

संक्रमण

मेरा कवि खुशामदी नहीं है

उमा भगत की चार कविताएँ

मुझे लगा था

मैं, चाची और छाती

चोर पुलिस

पीछे के बच्चे

ललन चतुर्वेदी की पाँच कविताएं

इलाहाबाद से प्रयागराज

दृश्य में जीवन ढूँढते लोग

पानी भी प्यास का इन्तज़ार करता रहता है

एक सुरक्षित कोना

एक दिन वे जरूर लौटेंगे

पल्लवी मुखर्जी की तीन कविताएँ

आधी उम्र गुजार चुकी औरत

प्रेम के आँसू

ठहरा हुआ पानी

प्रियदर्शी मातृ शरण

1.

लोभियों का गाँव

मैं लोभी नहीं हूँ -

ऐसा कहते हुए

मेरी जुबां भले न लड़खड़ाए

मेरी आँखें फड़फड़ातीं हैं

इधर-उधर-बगलें झाँकतीं हैं

चुराती हैं खुद को, कि

इनसे होकर कहीं कोई

उतर न आए भीतर,

और एकबारगी ही

उड़ा जाए धज्जियाँ

करीने से गढ़े हुए

मेरे निःस्वार्थ दिखते आवरण की!

लोभी तो कोई भी नहीं यहाँ

या फिर यूँ भी कि

लोभ सिद्ध ही नहीं हुआ

किसी का भी

किसी ने किसी को भी

तरेर कर भीतर तक

नहीं झाँका है अबतक

सभी अपनी आँखों पर

पर्दा डाले बैठे हैं -

गुण-दोषों की अनदेखी हो

इसलिए नहीं

बल्कि इसलिए कि

बचानी है उन्हें अपनी ही आँखें !

फिर एक रोज

लोभियों के इस गाँव में

रोजी ढूंढता हुआ

चला आता है एक ठग

जिसकी कारीगरी

उसकी आँखों के

भीतर तक झाँक आने में ही है

अपनी पथरीली आँखों से

झिंझोड़ने की कुव्वत रखता है वह

ऐसी कि एकबारगी भड़भड़ा कर

गिर जाए समूचा आवरण ही।

आवरण फिर भी बचे हैं

आडम्बर अब भी कायम है

ठग ने जमा ली है अपनी गद्दी

गाँववालों ने उसे

अपना चैकीदार नियुक्त किया है!